IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की की व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति अभिवृति का अध्ययन

निर्देषिका

डॉ. एकता पारीक

प्राचार्य

प्रस्तुतीकर्ती

राजकुमारी घासल

एम.एड.छात्रा

सारांश:—

व्यावसायिक कोर्स अर्थात व्यवसाय से जुडी हुई षिक्षा देना है। व्यावसायिक षिक्षा से तात्पर्य है कि किताबी ज्ञान बाहरी ज्ञान या व्यवहारिक ज्ञान के साथ—साथ कौषलात्मक ज्ञान था। व्यावसायिक ज्ञान भी होना आवष्यक है। जिससे बेरोजगार न रहकर सभी के पास रोजगार प्राप्त ही व्यावसायिक षिक्षा से छात्रो में बुनियादी ज्ञान कौषल और प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है। कोरोना काल में अच्छी षिक्षा वाले लोग भी बेरोजगार हो गयें थे। इसलियें ऐसी समस्या का सामना दोबारा से नही करना पडे इसलियें अनिवार्य रूप से व्यावसायिक कोर्स पर जोर देना चाहियें। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुयें शीर्षक वर्तमान परिपेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन के अन्तर्गत शोध कार्य किष। इस शोध कार्य को जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक षिक्षा परिषद मा.षि. राज. बोर्ड द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के दो संकायों के 15—15 छात्रों पर शोध किया तथा शोध अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला संकाय से वाणिज्य संकाय में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति सार्थक रूप अधिक है।

मूल शब्द:— राज. (जयपुर शहर) उच्च माध्यमिक स्तर के कलां संकाय, वाणिज्य संकाय और व्यावसायिक कोर्स आदि।

1. **शोध का शीर्ष:—** वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दुष्टिकोण का अध्ययन।
2. **प्रस्तावना:— :—**

व्यावसायिक षिक्षा का विद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम में व्यावसायिक षिक्षा को शामिल करने के प्रयासों से है, जिससे छात्रों में बुनियादी ज्ञान, कौषल और प्रतिभा को विकसित किया जा सके। सरल शब्दों में षिक्षा में व्यावसायिकरण का अर्थ सामान्य षिक्षा के साथ्श—साथ किसी व्यवसाय से संबंधित प्रषिक्षण देना।

व्यवसायिक षिक्षा जिसे कैरियर और तकनीकी षिक्षा के रूप में भी जाना जाता है। छात्रों को व्यापार, षिल्पी या तकनीकी जैसे विभिन्न क्षैत्रों में विषेष और प्रषिक्षण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

व्यावसायिक षिक्षा में कम शैक्षणिक षिक्षा शामिल है और यह मूल रूप से मैनुअल या व्यावहारिक गतिविधियों और प्रषिक्षण पर केन्द्रित

है। छात्रों को विषिष्ट तकनीकी या प्रोद्योगिकी में विषेषज्ञता विकसित होती है।

राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यालयों में 5+3+3+4 शैक्षणिक संरचना लागु की जायेंगी जो छात्रों के आयु वर्ग 3–8 वर्ष (मूलभूत चरण), 8–11 वर्ष (प्र्रारंभिक चरण)

11–14 वर्ष (मध्य चरण) और 14–18 वर्ष (माध्यमिक चरण) के अनुरूप होंती है।

व्यावसायिक षिक्षा उस प्रषिक्षण को संदर्भित करती है। जो विषिष्ट नौकरी, व्यापार या षिल्प के लियें आवष्यक कौषल और ज्ञान पर जोर देती है।

पर्यटन, खाद्य और पेय, कम्प्यूटर नेटवर्किंग, बैंकिग और वित, फैषन डिजाइनिंग, सम्पत्ति प्रबंधन और कई अन्य क्षैत्रो में विभिन्न प्रकार के रोजगार कार्यों के लियें व्यावसायिक षिक्षा प्रदान की जाती है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र अपने कौषल और रूचि के अनुसार उपलब्ध विविध पाठयक्रमों में से चुन सकते है।

– कक्षा 9वी से 12वी में व्यावसायिक पाठ्क्रम अधिगम या सीखने के परिणाम पर आधारित है।

– पाठ्यक्रम में राजगार परक कौषल (म्उचसवलंइपसपजल `ापससे) और व्यावसायिक कौषल ( अवबंजपवदंस `ापसस) पर मॉड्यूल शामिल है।

– पाठ्यक्रम के अलावा प्रषिक्षण पैकेज (ज्तंपदपदह च्ंबांहम) में छात्रों के लियें पाठ्य पुस्तके, मल्टीमीडीया पैकेज और ई–लर्निंग सामग्री शामिल है।

– उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक षिक्षा अलग–2 पाठ्यक्रमों पर आधारित होनी चाहियें।

यह एक पेषेवर पाठ्यक्रम है जो मापको व्यावहारिक कौषल प्रदान करता है, जिससे आप पाठ्यक्रम के पूरा होने पर नौकरी के लियें तैयार हो जाते है।

प्राथमिक स्तर के अनुसार:–

– कक्षा 6–8वी तक के विद्यार्थियों को पूर्व व्यावसायिक षिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक षिक्षा के बारे में अवगत करवाया जायेगा।

– प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को व्यावसायिक षिक्षा खेल–खेल के साथ देनी चाहियें।

– खिलौनों को बनाना हस्तकला कौषल विकसित करना चाहियें।

मध्यमिक स्तर के अनुसार:–

– कक्षा 9वी से 12 वी के विद्यार्थियों को अलग–अलग पाठ्यक्रमों की उपलब्धता सुनिष्चित की जायेंगी।

– 9 व 10 कक्षाओं के लियें व्यावसायिक षिक्षा के लियें 200 घण्टे आवष्यक है तथा 11वी व 12वी कक्षाओं के लियें 300 घण्टे की षिक्षा अनिवार्य है।

अत: प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लियें इस समस्या का चयन किया है, जिससे यह ज्ञात हो सके की आज भी समाज में षिक्षित व अषिक्षित परिवार कहीं न कहीं अच्छे रोजगार की तलाष में भटकते रहते है।

वैष्विक महामारी के दौरान षिक्षित लोगो के पास भी रोजगार नही रहा था। इसलियें षिक्षा के साथ साथ व्यासायिक प्रषिक्षण भी आवष्यक है।

समस्या कथन:–

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

व्यावसायिक षिक्षा का परिभाषीकरण:–

कोलिन्स डिक्षनरी ''व्यावसायिक अध्ययन'' को '' एक अकादमिक विषय के रूप में परिभषित करता है जो लेखांकन विपणन और अर्थषास्त्र जैसे क्षेत्रों को गले लगाता है। ''अधिकतर व्यासायिक अध्ययन ' एक अकादमिक स्तर पर अध्ययन है कि व्यवसाय विभिन्न वैष्विक बाजारों में व्यावहारिक और सैद्धान्तिक दोनो स्तरों पर कैसे संचालित होता है।

''व्यवसाय परक षिक्षा व्यक्तियों को एक विषिष्ट कार्य के योग्य बनाती है। जिससे अपनी विषिष्ट सेवाओं के द्वारा समाज में विषिष्ट क्षमता का प्रदर्षन करता है– जॉन डी.बी.

'' व्यावसायिक षिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे स्त्री एवं पुरूष व्यावसायिक भावनाओं के साथ परिश्रम पूर्व और उत्तरदायी सेवा के लियें अपने को योग्य बनाते है।

राधाकृष्ण आयोग(1998)

व्यावसायिक षिक्षा का अर्थः–

व्यावसायिक षिक्षा दो शब्दों के संयोग से निर्मित है। जिसमें पहला शब्द व्यवसाय एवं दुसरा शब्द षिक्षा । ''व्यवसाय'' शब्द जीविकोपार्जन के लियें अपनायें जाने वाले कारोबार के अर्थ में है तथा षिक्षा संबंधित व्यवसाय के प्रषिक्षण युक्त सीखने से है। तात्पर्य व्यासायिक षिक्षा वह षिक्षा है जो व्यवसाय संचालय संबंधि जानकारी प्रदान करती है।

व्यवसाय व तकनीकी दो ऐसे शब्दों है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हम सभी के साथ जुडे है। व्यवसाय से आषय वाणिज्य व उद्योग के सम्पूर्ण जटिल क्षेत्र आधारभूत उद्योगो, प्रविधिक व निर्माणी उद्योग तथा सहायक सेवाओं के वृहद जाल वितरण बैंकिंग आदि से है।। तकनीकी षिक्षा व्यासायिक षिक्षा का अंग है।

अध्ययन का औचित्यः–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने कुछ पहले किए गयें शोध को देखा , समझाा तथा पढा और उन पर विचार किया कि किस तरह वर्तमान परिप्रेक्ष्य ये व्यवसायिक षिक्षा (कोर्स) के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण कैसा है तथा कोविड–19 के दौरान जो समस्या सामने आयी उस को मध्यनजर रखते हुयें व्यवहारिक षिक्षा के साथ साथ व्यवसायिक षिक्षा भी देना चाहियें। जिससे मानव किसी क्षैत्र में अपनी जीविकोपार्जन पूर्ण कर सके। किसी पर निर्भर न रहे आत्मनिर्भर रहे ऐसा कौषल सभी के पास होना चाहियें। जिससे व्यक्ति अपनी दैनिक गतिविधियों को पूर्ण कर सके। भारत में व्यावसायिक षिक्षा वर्तमान में 5प्रतिषत जो 2025 तक 50प्रतिषत करने का वादा है। स्कूली स्तर पर दात्रों की रचनात्मक क्षमता को तराषने के उद्धेष्य से सरकार ने स्कूलों में 11वी और 12वी कक्षा में छात्रों के लियें कलां, विज्ञान और वाणिज्य विषयों के साथ एनीमेषन ललित कला, संगीत, लकडी का काम, दस्तकारी, पाक कला पारा मेडिक्स, आतिथ्य क्षेत्र और अन्य दक्षता अध्ययन जैसे विषयों पर पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बनाई है। कोविड–19 में सरकारी व गैर सरकारी क्षैत्र में कार्यरत् लोगो को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। आज के इस षिक्षा दौर में षिक्षा तो है परन्तु रोजगार नही है। तो इस रोजगार की तलाष के कारण विद्यार्थियों में व लोगों में रोजगार संबंधि भावनाओं का विकास हुआ है और ये आज आई.टी. क्षैत्र को चुन रहे है। तो इस अध्ययन का यह औचित्य है कि सीाी संकायों में व्यावसायिक कोर्स अनिवार्य के रूप से देना चाहियें। सभी को षिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक षिक्षा भी देनी चाहियें।

व्यावसायिक षिक्षा और प्रषिक्षण के उद्धेष्यः–

– उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संख्या के बडे भाग को कार्यजगत में जोडना।

– षिक्षा को उत्पादकता आर्थिक विकास और वैयक्तिक समृद्धि से जोडना।

–संगठित और असंगठित दोनो प्रकार के बढते आर्थिक क्षैत्रों में दक्ष और मध्य स्तर की मानव शक्ति की आवष्यकताओं को पूरा करना।

–बच्चो को औद्योगिक कौषल प्रदान करना।

–बहनों का आत्मनिर्भर बनाना और लाभदायी रोजगार के लायक तैयार करना।

–उच्च षिक्षा के अनुसरण को रोकना उन्हे उत्पादन की राह पर ले जाना।

–बच्चों का ज्ञानात्मक, कौषलात्मक तथा उद्यमिता विकास करना जिससे वे एक अच्छा नागरिक के रूप में देष के विकास में सहयोग प्रदान कर सके।

परिकल्पनाः—

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनायेंः—

— उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक षिक्षा के चुनाव के प्रति बालक, बालिकाओं के मध्यमानों के सार्थक अन्तर नही है।

—उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव प्रति शहरी व ग्रामीण छात्र छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

—व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति कला संकाय व वाणिज्य संकाय में कोई सार्थक अन्तर नही है।

—उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव में प्रति सामाजिक व आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

—उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यवसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्षः— प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्ष के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के निजि विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों (50 लडके+50 लडकियों) का चयन किया जावेगा।

न्यादर्ष चयन की विधिः—

प्रस्तुत शोध में सवैक्षण विधि का चयन किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरणः—

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण, प्रष्नावली का प्रयोग किया जायेगा जो कुछ आयामों पर आधारित होगी।

शोध का परिसीमांकनः—

— समस्या का क्षेत्र व्यापक होने के कारण सम्पूर्ण क्षैत्र का अध्ययन भारत में तथा भारत के जयपुर जिले तक ही सीमित होगा।

—प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्य के लियें निजी विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

—प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के 50 बालक व 50 बालिकाओं पर शोध का प्रयोग किया जायेगा।

—शोध कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

—प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया जायेगा।

—प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 कलां संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों कां शामिल किया जायेगा।

3. सम्बन्धित साहित्यः—

प्रत्येंक समस्या का कोई इतिहास होता है। अतः संबंधित साहित्य पढकर ही परिकल्पना का निर्माण ठीक प्रकार से हो सकता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन से ही शोधकर्ता को यह ज्ञात होता है कि समस्या संबंधित किस पक्ष पर कार्य हो चुका है। मनुष्य अपने ज्ञान में वृद्धि विभिन्न व्यक्तियों के संपर्क और विभिन्न साहित्य का अध्ययन करके प्राप्त करता है। अतः मनुष्य साहित्यों का अध्ययन करके ज्ञान संग्रहण और ज्ञान वृद्धि करता है।

1. कौरे, प्रदीप (2007) : इस अध्ययन का उद्धेष्य किषोर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक आकांक्षा व तनाव के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस निष्कर्ष में यह पाया गया कि किषोरो के तनाव के स्तरो में विभिन्नता पायी जाती है। जो कि तनाव के उच्च व निम्न स्तर पर आधारित होता हैं। उच्च तनाव व निम्न तनाव के विद्यार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में अन्तर पाया गया।
2. आर.बाबू, कालियामूर्ति के.(2007):— इस अध्ययन का उद्धेष्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन, आकांक्षा व बहीखाता में उपलब्धि का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उनके विद्यालय, लिंग, माता—पिता की

षिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक समायोजन, आकांक्षा और बहीखाता में अन्तर पाया गया। छात्रा की तुलना में छात्रों में ज्यादा अच्छा समायोजन पाया गया।

3. नरूला (2007):— इस अध्ययन का उद्धेष्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक कोर्स पर क्षैतिज उपलब्धि में मापन का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यार्थी की व्यावसायिक कोर्स व क्षैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

4. गिल्स, बिल्ले (2002):— विद्यार्थियों की शारीरिक क्रियाओं पर व्यक्तिगत, शारीरिक व सामाजिक वातावरण निर्धारकों के प्रभाव का संबंध का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यार्थियों की शारीरिक क्रियाओं का सामाजिक निर्धारको से सकारात्मक संबंध पाया गया।

विश्लेषण:—

उपर्युक्त अध्ययन में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, रूचि, शैक्षिक उपलब्धि, व्यवसायिक उपलब्धि, परिवार की प्रकृति तथा शैक्षिक व्यावसायिक कोर्स इत्यादि।

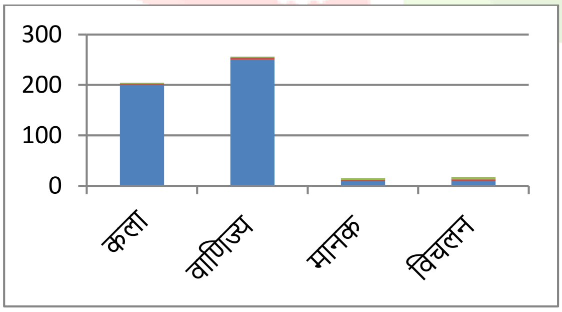

आकृति— 1 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का ग्राफीय अध्ययन:—

आकृति से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर कलां, के विद्यार्थियों(एन.—15) के व्यासायिक कोर्स के चुनाव के परीक्षण प्राप्तांको का मध्यमान 19.20 एवं मानक विचलन 13.26 प्राप्त हूआ तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों (एन—15) प्राप्तांको का मध्यमान 21.96 तथा मानक विचलन 2.53 प्राप्त हुई है।

आंकडो का सारणीयन एवं विष्लेषण

तालिका 1:— वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर (कला संकाय+वाणिज्य संकाय) के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

क. सं.	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	अनुपात	सार्थकता
1	व्यासायिक कोर्स के चुनाव के प्रति कला संकाय के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण	15	छ$_1$त्र19	13.26	2.1	0.067
2	व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण	15	छ$_2$त्र22	2.53		पर सार्थक

उपर्युक्त परिणामों के अनुसार 1 अनुपात का भाग गणना द्वारा 2:1 प्राप्त हुआ है। तालिका के अनुसार डी.एफ. 28 पर + 51 आवष्यक मान — 2.43 है। यहाँ चूँकि + के आवष्यक मान से + का गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है इसलियें 0.067 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति कोई सार्थक अन्तर नही है। निरस्त करते हुयें कह सकते है कि कला संकाय से वाणिज्य संकाय का मध्यमान आपके है। और दोनो मध्यमानो में सार्थक अन्तर है।

सुझाव:— अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर व्यावसायिक कोर्स के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत कियें गयें—

- ➢ यह परिणाम निजि विद्यालय के संचालको को अपने विद्यालय की गुणवता हेतु संकेत प्रदान करता है।

शोध निष्कर्षः–

अतः स्पष्ट होता है कि कला संकाय के छात्र छात्रों की अपेक्षा वाणिज्य संकाय के छात्र छात्रा सार्थर रूप से अधिक है।

वाणिज्य संकाय में सार्थकता अधिक है। वाणिज्य संकाय में सार्थकता अधिक होने के कारण संभीवतः योग्य प्रषिक्षण । प्राप्त षिक्षको द्वारा षिक्षण कार्य विद्यार्थियों पर आर्थिक बोध न होना तथा विद्यालय में शैक्षिक वातावरण का होना महत्वपूर्ण कारण प्रतीत होते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

❖ भटनागर, सुरेष (2009) , षिक्षा मनोविज्ञान आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

❖ गुप्ता, मधु (2005) ''पारिवारिक वातावरण गुह वातावरण एवं माता पिता की सभिागिता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव'' भारतीय शोध पत्रिका वर्ष 22, जनवरी जून 2005,